दिसंबर 2025

अंक 7

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

दिसम्बर 2025, अंक 7

संपादक

हंसा दीप

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो, कनाडा

सहायक संपादक

वेदप्रकाश सिंह

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

परामर्श मंडल:

अडेलै हेनिश-टेम्बे, लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी
आनंद वर्धन शर्मा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एरिका करांति, तूरीन विश्वविद्यालय, इटली
दिव्यराज अमिय, त्युबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी और ज़्यूरिख विश्वविद्यालय स्विट्जरलैंड
राम प्रसाद भट्ट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
ली यालान, बीजिंग फ़ॉरन स्टडीज़ यूनिवर्सिटी, चीन
शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल

स्थायी संपर्क पता:

नॉटनल, स्वत्वाधिकार © 2024
16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ- 226016, उत्तर प्रदेश, भारत
antardesh.patrika@gmail.com

अंतरदेश से जुड़े क़ानूनी विवाद लखनऊ उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आएँगे। मौखिक और लिखित रचनाओं और कृतियों में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, नॉटनल, संपादक और संपादक मंडल के नहीं।

अनुक्रम

- **संपादकीय** 4

आलेख

- इंटरनेट की दुनिया में हिन्दी - गौरीशंकर वैश्य विनम्र 7
- उपस्थित और अनुपस्थित : विनोद कुमार शुक्ल की कविताओं में प्रकृति और स्त्री: प्रेम रंजन अनिमेष 16
- सिनेमा में देहभाषा - कृष्ण बिहारी पाठक 23
- लेखक के लिए चुनौती - कुबेर कुमावत 30
- सफलता की राह में तीन भूलें – मेघा राठी 35

व्यंग्य

- विमोचन का लूज़ मोशन - मेरी पुस्तक का विमोचन – मुकेश असीमित 38
- कुत्ते हमसे ऊपर - दलजीत कौर 44

कहानी

- प्रत्यारोपण - सुषमा मुनीन्द्र 47
- जीवनधारा – रीता कौशल 67
- गुड्डी का जूता - सुनीता पाण्डेय 83
- पहाड़ का गुस्सा - निरुपमा सिंह 86
- तो अंत नहीं – राम नगीना मौर्य 91

- चार यार – प्रेमलता यदु 107

कविता

- केशव शरण 116
- पारमिता षड़ंगी 120

हिंदी छात्र परिशिष्ट 122

- ओएगिन म्युलर, जर्मनी
- मारिया पापे, जर्मनी
- अन्ने ह्यूकमन, जर्मनी
- जेनिफर क्लीमेंस, जर्मनी
- ओतानी कुरु, जापान
- कनाया शुन्ता, जापान
- काकुदा करीना, जापान
- मुराकामी रीना, जापान
- हमादा मिज़ूकी, जापान
- सांद्रा लुटावन, सूरीनाम
- तिम्ना रोशिनी, श्री लंका

(रेखाचित्र गूगल से साभार)

उन पलों में जीते हुए

यात्राएँ समृद्ध करती हैं।

भोपाल में विश्वरंग 2025 में सहभागी होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह मेरे लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि पहली बार भोपाल में आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय और व्यापक सांस्कृतिक आयोजन का साक्षी बनने का अवसर मिला। विश्व की विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को समेटे यह आयोजन अपनी बहुरंगी प्रकृति और व्यापक दृष्टि के कारण विशिष्ट एवं प्रभावशाली रहा।

कला, साहित्य और संस्कृति का अनूठा, समन्वित स्वरूप एक ही मंच पर साकार होता प्रतीत हुआ। आयोजन से जुड़े आयोजकों, वक्ताओं और प्रतिभागियों में उत्साह और प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुई। भोपाल की सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता के साथ सामंजस्य स्थापित करता यह आयोजन विश्व के विभिन्न देशों से आए विद्वानों के बीच संवाद, सहयोग और विचार-विनिमय का महत्वपूर्ण केंद्र बना। समग्र रूप से, विश्वरंग 2025 एक सुव्यवस्थित, प्रेरणादायी और स्मरणीय कार्यक्रम सिद्ध हुआ।

इस बार की भारत यात्रा ने कई नए अनुभवों से रू-ब-रू कराया, अच्छे भी, बुरे भी। सब कुछ हमेशा अच्छा नहीं होता, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि सब कुछ हमेशा बुरा भी नहीं होता। कहीं अच्छे लोग मिले, तो कहीं बुरे लोगों ने भी अपना परिचय दिया, कुछ इस तरह

कि बुराई, अच्छाई के भीतर छिपी रही। यूँ स्वयं को चतुर समझते हुए भी, मूर्ख बनने की प्रक्रिया हमेशा की तरह जारी रही। उन पलों में एक ही दिशा में चलता मन यह नहीं समझ पाता कि कब, कहाँ और किस रूप में कोई आपदा आकर सब कुछ सुन्न कर देगी।

यही हुआ। समूची भारत यात्रा का तनाव इस कदर हावी रहा कि हर मिनट लंबी साँस लेकर बस यही सोचते रहे किसी तरह घर पहुँच जाएँ। घरेलू उड़ानों का रद्द होना, कोहरे की वजह से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का स्थगित होना, ऐसे कई अनुभव रहे कि अब यात्रा करने से पहले कई-कई बार सोचना पड़ेगा। इंडिगो एयर लाइन्स के पचड़े ने कई लोगों का हज़ारों का नुकसान करा दिया, क्योंकि उससे जुड़ी हुई अन्य उड़ानें किसी का इंतज़ार नहीं कर सकतीं। फिर से बुकिंग करना, होटलों में कमरे ढूँढना और दिनों के गुजरते किसी तरह अपने घर पहुँचना। सब कुछ बेहद थका देने वाला था।

मेरे ही साथ आगे-पीछे सफर कर रही एक दोस्त की आपबीती थी- दिल्ली के कोहरे के कारण प्रतीक्षा करते-करते रात भर यात्रियों को हवाई जहाज में बैठा कर रखा गया। कुछ दिनों पहले एक अन्य दोस्त की कहानी सुनी थी जो ईरान अपने देश पहुँची ही थी कि रातों रात युद्ध शुरू हो गया। धमाकों के बीच अपनी जान बचाते, कई मुश्किलों को पार करके, हज़ारों डॉलर खर्च करके, किसी तरह अपने घर लौट पाई। और भी कई ऐसे हालात जो यही बताते रहे कि अलग-अलग परिस्थितियाँ होने के बावजूद सब यात्रियों की चिंताएँ एक-सी थीं- किसी तरह घर पहुँचना। ये किस्से-कहानियाँ नहीं, अपने और मित्रों की आँखों देखी सच्चाइयाँ थीं, जिन्हें काग़ज़ पर उतरना ही था। अपनी मेज़ पर बैठकर इन्हें लिखना उतना ही पीड़ादायी है, जितना उन पलों में था।

इन सबके बावजूद क्या मैं, हम, आप रुक जाएँगे? अपने देश में बाहर से आए लोगों का स्वागत कैसा होगा! अतिरिक्त पैसों की माँग या फिर अतिरिक्त अपनापन? “किस्मत अपनी-अपनी” कहकर देश छोड़ने के बाद, फिर से जाने का मन होगा ही, और इन सब चीज़ों से लड़ने की फिर से ताक़त भी मिल जाएगी।

समय निरंतर प्रवाह है। न वह रुकता है, न लौटता है। मनुष्य अपनी स्मृतियों, योजनाओं और आकांक्षाओं के सहारे समय को बाँधना चाहता है, परंतु वास्तविकता यह है कि हम स्वयं ही समय के साथ बह रहे होते हैं। आज का मनुष्य या तो बीते कल के पछतावे में उलझा है या आने वाले कल की चिंता में। वर्तमान पल हाथ से फिसलता जाता है। विदेश में रहते देश जाने का उत्साह चरम पर होता है और वहाँ पहुँचते ही वापस घर लौटने की बेचैनी भी उतनी ही तीव्र हो जाती है। यह क्रम चलता रहेगा। यात्राएँ होती रहेंगी। मनुष्य पंछी है, अपने पर फैलाकर उड़ना ही उसके लिए सुखद है।

हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल जी, कथाकार ज्ञानरंजन जी, एवं मित्र विजय कुमार तिवारी जी हमारे बीच नहीं रहे। अंतरदेश परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

हंसा दीप,

टोरंटो, कनाडा

***

इंटरनेट की दुनिया में हिन्दी

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

अंतरजाल अर्थात "इंटरनेट" शब्द को आज सभी लोग जानते हैं। बच्चे हों या बड़े सभी इसका प्रयोग करना अच्छी तरह से जानते हैं। इंटरनेट ने आज हमारी बहुत सी मुश्किलों को आसान कर दिया है, जिसके कारण हर हमें हर कार्य बहुत सरल लगता है। इंटरनेट मनुष्य को विज्ञान द्वारा दिया गया एक सर्वश्रेष्ठ उपहार है।

वर्तमान युग सूचना और संचार की तीव्रतम गति वाला युग है। इसे *डिजिटल युग*, *सूचना क्रांति का युग* अथवा *इंटरनेट का युग* भी कहा जाता है। आज विश्व की लगभग आधी से अधिक जनसंख्या इंटरनेट से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ी हुई है। इंटरनेट ने न केवल मानव जीवन की कार्यप्रणाली, सोच और जीवनशैली को प्रभावित किया है, अपितु भाषाई परिदृश्य को भी नया आयाम प्रदान किया है। अंग्रेजी भाषा लंबे समय तक डिजिटल संसार पर छाई रही, परंतु पिछले दो दशकों में हिन्दी ने इंटरनेट की दुनिया में उल्लेखनीय स्थान अर्जित किया है।

हिन्दी अब केवल भारत की जनभाषा नहीं रही, अपितु इंटरनेट की वैश्विक भाषा के रूप में अपनी पहचान बना रही है। इसका विस्तार, प्रयोग, तकनीकी विकास और सामग्री की गुणवत्ता —ये सभी संकेत करते हैं कि आने वाला समय "डिजिटल हिन्दी" का युग होगा।